IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समस्तीपुर जिले के शासकीय महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों एवं शारीरिक शिक्षा हेतु अधोसंरचना का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ मीनाक्षी पाठक (प्राध्यापिका)
शारीरिक शिक्षा विभाग
एस.एस.एस.यू.टी.एम.एस. सिहोर, (मप्र)

शब्द कुंजी : जिला समस्तीपुर में संचालित शासकीय महाविद्यालय, खेलकूद गतिविधियाँ, शारीरिक शिक्षा हेतु अधोसंरचना

1. प्रस्तावना

षारीरिक षिक्षा विद्यालयीन और महाविद्यालयीन तथा विष्वविद्यालयीन स्तर पर पढ़ाया जाने वाला एक पाठ्यक्रम है। इस षिक्षा से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं से है, जो मनुष्य के षारीरिक विकास तथा कार्यो के समुचित संपादन में सहायक होती है। किसी भी समाज में षारीरिक षिक्षा का महत्व उसकी प्रवृत्तियों, धार्मिक विचार धाराओं, आर्थिक परिस्थिति तथा आदर्ष पर निर्भर होती है। प्राचीन काल में षारीरिक षिक्षा का उद्देष्य मांसपेषियों को विकसित करके षारीरिक षक्ति को बढ़ाने तक ही सीमित था और इस सब का तात्पर्य यह था कि मनुष्य आखेट में, भारवहन करने में, तालाब या समुद्र में गोता लगाने में सफल हो सके, किन्तु षारीरिक षिक्षा के उद्देष्य में भी समय के अनुसार परिवर्तन होता गया और षारीरिक षिक्षा का अर्थ षरीर के अवयवों के विकास के लिये सुसंगठित कार्यक्रम के रूप में होने लगा। वर्तमान समय में षारीरिक षिक्षा के कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यायाम, खेलकूद, मनोरंजन आदि विषयों को षामिल किया जाने लगा है। इन कार्यक्रम को निर्धारित करने के लिये षरीर रचना तथा षरीर क्रिया विज्ञान, मनोविज्ञान तथा समाज विज्ञान के सिद्धान्तों से आधार लिया जाता है। व्यैक्तिक रूप में षारीरिक षिक्षा का उद्देष्य षक्ति का विकास और नाड़ी स्नायु संबंधी कौषलों की वृद्धि करना होता है तथा सामूहिक रूप में सामूहिकता की भावना को जाग्रत करना होता है।

षारीरिक षिक्षा सामान्य षिक्षा की एक षाखा है। षिक्षा के उद्देष्यों में बालक का षारीरिक विकास करना भी एक प्रमुख उद्देष्य है। इस हेतु षारीरिक षिक्षा की प्रमुख भूमिका है। षारीरिक षिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के माध्यम से बालक काष्षारीरिक विकास सम्भव है।ष्षारीरिक षिक्षा हेतु सक्रियता का होना बुनिचादी आवष्यकता है। सक्रियता हेतु व्यक्ति का बालक का, खिलाड़ी का, षरीर और मन दोनो का स्वस्थ रहना अनिवार्य है। किसी भी क्षेत्र में अधिगम या प्रषिक्षण हेतु सीखने वाले के मन की एकाग्रता होना आवष्यक है। बालक में जिस क्षेत्र का अधिगम या जिस खेल का प्रषिक्षण उसवे मिल रहा है उसमें उसकी रूचि है या नहीं वह मन से उसके प्रति एकाग्र है या नही? षारीरिक षिक्षक के लिये यह तभी सम्भव है जब षिक्षक को स्वंय को यह ज्ञान हो कि मन क्या है? मन की अवस्थायें कौन–कौन सी है? ताकि खिलाड़ियों की मनोस्थिति का सही पता चल सके।

भारत सरकार के षिक्षा मंत्रालय ने सन् 1959–60 में राष्ट्रीय षारीरिक क्षमता और जांच परियोजना का आरम्भ किया। इस योजना में षारीरिक निपुणता के लिये ऐसी क्रियायें है जिससे व्यक्ति केष्षारीरिक स्तर का पता लग सकता है। इस परियोजना का मुख्य उद्देष्य देष के नागरिकों को षारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक दृष्टि से उन्नत बनाना है। एक स्वस्थ व्यक्ति अच्छा नागरिक बन सकता है, स्वस्थ व्यक्ति ही समाज एवं देष के प्रति अपने कर्त्तव्यों का भलीभांति पालन कर सकता है। इस को अनुभव करके राष्ट्रीय योग्यता लहर आरम्भ की गयी तथा इसे राष्ट्रीय षारीरिक क्षमता और जांच परियोजना का नाम दिया गया। इस परियोजना को पहले दो वर्ष तक प्रयोग के तौर देष में चलाया गया तथा इसमें आयी कमियों को विषेषज्ञों की सलाह से दूर करने की आवष्यकता अनुभव की गयी। इस हेतु सेमिनार आदि भी कराये जाते रहे ताकि परियोजना की उन्नति का अनुमान होता रहे और यह परियोजना अच्छी तरह से चालू रखी जा सके। इस परियोजन में पुरूष और महिलाओं की आयु के अनुसार अलग अलग परीक्षण रखे गये। सन् 1980 के राष्ट्रीय खेल नीति के प्रारूप में इस बात पर जोर दिया गया कि इस परियोजना में कमियों को सुधार कर पुनः नये सिरे से आरम्भ किया जाये। यह योजना को भले ही बहुत परिश्रम तथा लगन से आरम्भ किया गया था फिर भी यह लोगों में पूर्णतः लोकप्रिय नहीं हो सकी इसके निम्न कारण रहे –

1. इस योजना को लागू करने वाले निचले स्तर पर इसे उत्साह से संगठित नहीं कर पाये।
2. नौकरषाही के कुप्रबन्ध के कारण लोगों को सर्टिफिकेट और मेडल नहीं मिले जो कि इस योजना के वास्तविक प्रेरक थे।
3. भाई भतीजेवाद के चलते योग्यता नहीं रखने वालों को भी प्रमाण पत्र एवं मेडल दिये गये।

परिणामस्वरूप यह परियोजना बन्द हो गयी, वर्तमान में इस पर कोई कार्य नहीं किया जा रहा है। स्वतंत्रता उपरान्त से ही षारीरिक षिक्षा, खेलों, मनोरंजन एवं स्वास्थ्य के विकास के लिये कई योजनायें भारत सरकार द्वारा बनायी गयी। भारत सरकार ने कई योजनायें एवं संस्थाओं का आरम्भ किया, फिर भी आजादी 70 वर्ष के बाद भी अगर हम दृष्टि डाले तो पाते है कि ओलम्पिक जैसे महान विष्वस्तरीय खेल आयोजन में हमें एक पदक प्राप्त करने में भी सम्भावनायें तलाषनी होती है।

अस्तु हमें आज यह सोचने पर मजबूर होना पड़ रहा है कि हमने कहां कमी है जिससे कि हम अपने खेल स्तर में प्रगति नहीं कर पा रहे है। स्वतंत्रता उपरान्त भारत सरकार में विद्यालय स्तर और उच्च षिक्षा स्तर पर जितनी भी समितियां बनायी सभी ने सरकार को यही सुझाव एवं संस्तुतियां दी कि विद्यालय स्तर और उच्च षिक्षा स्तर पर षारीरिक षिक्षा को षिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग मानते हुये पाठ्यक्रम में इसे षामिल किया जाये। लेकिन 1986 की राष्ट्रीय षिक्षा नीति के अनतर्गत भी कोई सराहनीय कार्य इस दिषा में नहीं किया गया। जो भी योजनायें बनायी गयी वे 10 से 15 वर्ष में ही दम तोड़ती नजर आयी। सबसे नवीनतम योजना भारतीयम, का भी यही हाल हुआ। उच्च षिक्षा के सन्दर्भ में तो षारीरिक षिक्षा का और बेहाल है, षारीरिक षिक्षा प्रदान करने वाले प्रषिक्षण संस्थान तो कुछ हद तक महज खानापूर्ति कर डिग्री बांटने का कार्य कर रहे है और सामान्य उपाधि वाले महाविद्यालय की स्थिति बहुत ज्यादा खराब है।

उच्च षिक्षा के सन्दर्भ में सामान्य उपाधि प्रदान करने वाले महाविद्यालय में नियमानुसार षारीरिक षिक्षा एवं उसकी जुड़ी गतिविधियों का संचालन किया जाना अनिवार्य है, लेकिन कुछ महाविद्यालयों के अमल किये जाने के अलावा अधिकांष महाविद्यालयों में ना तो षारीरिक षिक्षा हेतु मूलभूत सुविधायें उपलब्ध है, ना ही प्रषिक्षण प्रदान करने वाले षारीरिक षिक्षक मौजूद है।

2. समस्या शीर्षक

समस्तीपुर जिले में संचालित शासकीय महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों
एवं शारीरिक शिक्षा हेतु अधोसंरचना का समीक्षात्मक अध्ययन

3. शोध उद्देश्य

1. समस्तीपुर जिले में संचालित शासकीय महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों एवं शारीरिक शिक्षा हेतु अधोसंरचना का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

4. शोध परिकल्पना

1. समस्तीपुर जिले में संचालित शासकीय महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों एवं शारीरिक शिक्षा हेतु अधोसंरचना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जा सकता है।

5. परिसीमा

1. प्रस्तुत अध्ययन जिला समस्तीपुर में संचालित चार शासकीय महाविद्यालयों से परिसीमित किया गया है।

6. शोध एवं सांख्यिकीय विधि

प्रस्तुत शोध में परीक्षणों की सहायता से संग्रहित किये गए आंकड़ों से प्राप्त सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इनको एक निश्चित रूप प्रदान करना था इसलिए सांख्यिकीय परीक्षण में मध्यमान, सह–संबंध, केन्द्रीय प्रवत्तियों एवं टी–परीक्षण को शामिल किया गया है।

सारणी संख्या – 1

समस्तीपुर जिले के षासकीय महाविद्यालय में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना के अध्ययन का सांख्यिकीय विष्लेषण

<table>
<tr><th>क्रं</th><th>विवरण</th><th>छ</th><th>∑ग</th><th>डमंद</th><th>ˆक</th><th>कि</th><th>‟</th><th>डै</th><th>ॾ</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर</td><td>30</td><td>392</td><td>13.0667</td><td>2.2427</td><td rowspan="2">3</td><td rowspan="2">27</td><td rowspan="2">9</td><td rowspan="4">1.4099</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा</td><td>30</td><td>391</td><td>13.033</td><td>2.2203</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>आर. वी. कॉलेज, दलसिंहसराय</td><td>30</td><td>365</td><td>12.166</td><td>3.2598</td><td rowspan="2">116</td><td rowspan="2">740.466</td><td rowspan="2">6.3833</td></tr>
<tr><td>4</td><td>ए. एन. डी. कॉलेज पटोरी</td><td>30</td><td>404</td><td>13.466</td><td>2.2242</td></tr>
</table>

च दृ अंसनम ए243454

च ढ .05 पर असार्थक

आरेख संख्या – 1

समस्तीपुर जिले के षासकीय महाविद्यालय में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना के अध्ययन के सांख्यिकीय विष्लेषण का दण्ड आरेखीय निरूपण

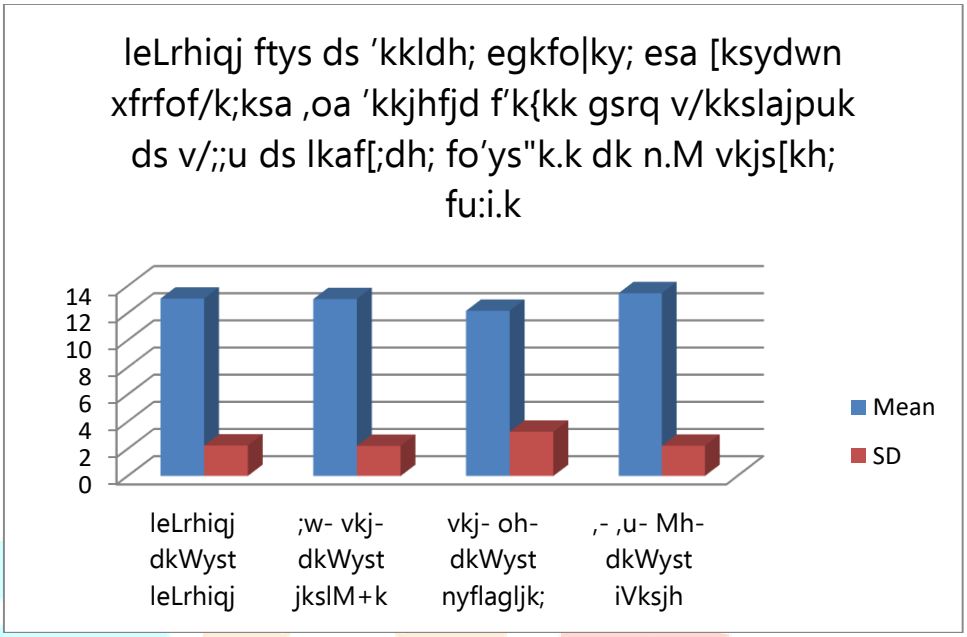

7. प्रदत्तों का विश्लेषण

उक्त सारणी संख्या – 1 के विष्लेषण से स्पष्ट है कि समस्तीपुर जिले के षासकीय महाविद्यालय में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना के अध्ययन का सांख्यिकीय विष्लेषण में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना हेतु समस्तीपुर कॉलेज समस्तीपुर, में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 13.0667 तथा मानक विचलन 2. 2427 है, यू. आर. कॉलेज रोसड़ा में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 13.033 तथा मानक विचलन 2.2203 है आर. वी. कॉलेज दलसिंहसराय में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 12.166 तथा मानक विचलन 3.2598 है तथा ए. एन. डी. कॉलेज पटोरी में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 13.466 तथा मानक विचलन 2.2242 है। इसी प्रकार सारणी के विष्लेषण से स्पष्ट है कि समस्तीपुर जिले के षासकीय महाविद्यालय में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना के अध्ययन का सांख्यिकीय विष्लेषण में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना हेतु समस्तीपुर कॉलेज समस्तीपुर, यू. आर. कॉलेज रोसड़ा, आर. वी. कॉलेज दलसिंहसराय तथा ए. एन. डी. कॉलेज पटोरी में खेलकूद गतिविधियों एवं षारीरिक षिक्षा हेतु अधोसंरचना से सम्बन्धित प्राप्तांकों के ि दृ अनुपात मूल्य 2.29591 तथा च दृ मूल्य 0.081393 है, जो च ढ .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक पाया गया है। चूँकि समस्तीपुर जिले के शासकीय महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों एवं शारीरिक शिक्षा हेतु

अधोसंरचना में परस्पर अन्तर असार्थक पाया जाता है, अतएव परिकल्पना क्रमांक 1 – समस्तीपुर जिले के शासकीय महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों एवं शारीरिक शिक्षा हेतु अधोसंरचना में सार्थक अन्तर पाया जा सकता है, को अस्वीकृत किया जाता है।

8. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता. एस. पी., "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन", इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2004.
2. गुप्ता, एस. पी, "सांख्यिकीय विधियाँ, विकास एवं समस्याएँ", इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 2004.
3. गैरेट, एच. ई, "स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन,", बम्बई वैकिल्स फीफर एण्ड सीमंस प्रा0लि0, 1969.
4. गोलमैन, डी. "इमोशनल इन्टेलीजेन्सः हवाई इट कैन मैटर मोर दैन आई. क्यू." न्यूयार्कः बैन्टम बुक्श.
5. जैन. मनोरमा, "जर्नल आफ साइक्लोजिकल रिसर्च ", 2015 – (1982) वाल्यूम 18 नं. 1 (द मद्रास साइक्लोजिकल सासाइटी मद्रास), 2015.
6. कमलेश, एम. एल., 1988, शारीरिक शिक्षा के तथ्य एवं आधार, पी. पी. पब्लिकेशन प्रा. लि., फरीदाबाद।
7. कमलेश एवं संग्राल, 1984, शारीरिक शिक्षा एवं खेल का मनोविज्ञान, मेट्रोपोलिटन, नई दिल्ली.
8. कमलेश, एम. एल., 1988, शारीरिक शिक्षा के तथ्य एवं आधार, पी. पी. पब्लिकेशन प्रायवेट लिमिटेड, फरीदाबाद.
9. कंवर, रमेश चंद, 2006, ऐलिमेंट्स ऑफ फिजिकल एजूकेशन, अमित ब्रदर्स पब्लिकेशन्स, नागपुर.
10. कार्लिंगर, एफ., "फाउण्डेशन आफ विहैवियरल रिसर्च", न्यूयार्क, हाल्ट राइनहर्ठ एण्ड विन्सटन, 1966